पद्य खंड

दक्षता आधारित कार्य-पत्रक

विषय: हिन्दी कक्षा:9वीं

पाठ/प्रकरणकानाम:	साखियाँ एवं सबद : कबीर	**समयावधि:**	40मिनट
विद्यार्थीकानाम:	----------	**पूर्णांक:**	20
अनुक्रमांक(रोलनं.) :	.....	**दिनांक:**	...../...../.....

निर्देश:- **1.सभी प्रश्न अनिवार्य है | 2. कार्य-पत्रक में दिए गए स्थान पर ही उत्तर लिखें |**

3. लेखन कार्य की स्पष्टता एवं शुद्धता का विशेष ध्यान रखें |

	(काव्यांश आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न)	5
	पठित काव्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 1X5 =5 मोकों कहाँ ढूंढे बंदे, मैं तो तेरे पास में। ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में। ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में। खोजी होय तो तुरतै मिलि हौं, पलभर की तालास में। कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वांसों की स्वांस में।	
1.	**कबीर ने किसे संबोधित किया है?** **1.** जो परमात्मा को प्राप्त करना चाहते हैं। 2. जो संसार को प्राप्त करना चाहते हैं। 3.जो सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। 4. उक्त में कोई नहीं	
	(क) (1) और (2) **(ख)** (1) और (3)	
	(ग) केवल (1) **(घ)** (4) और (3)	
2.	**कबीर ने ईश्वर के किस रूप को प्राप्त करने पर बल दिया है?** **1.** साकार ब्रह्म **2.** निर्गुण ब्रह्म **3.**सगुण ब्रह्म **4. उक्त सभी**	1
	(क) (1) और (3) **(ख)** केवल (4) **(ग)** केवल (3) **(घ)** केवल (2)	
3.	**निम्नलिखित कथनोंमें सत्य कथन हैं –** **1.** ब्रह्म की प्राप्ति पल भर की तलाश में होती है 2. ब्रह्म हर प्राणी के भीतर उसकी सांस में बसता है 3.प्राणी को ब्रह्म की प्राप्तिदेवालय में ही होती है 4. उक्त में कोई नहीं	1

egyanarchive

	(क) (1) और (2) **(ख)** (4) और (3)	
	(ग) केवल (1) **(घ)** (1) और (3)	
4.	**'मैं' और'तेरे' किसकेलिएप्रयुक्तहुआहै?** **1.** 'मैं' का प्रयोग कबीर और'तेरे' का प्रयोग ईश्वर के लिए **2.** 'मैं' का प्रयोग मनुष्य और 'तेरे' का प्रयोग ईश्वर के लिए **3.** 'मैं' का प्रयोग ईश्वर और 'तेरे' का प्रयोग मनुष्य के लिए **4.** दोनों का प्रयोग ईश्वर के लिए	1
	(क) (1)और(2) **(ख)** केवल (3)	
	(ग) (2) और (3) **(घ)** केवल (4)	
5.	**निम्नलिखित कथनऔर कारण पर विचार कीजिए-** **कथन-**कबीर ने निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति के लिए किसी भी प्रकार के आडंबर का विरोध किया है **कारण-**निर्गुण ब्रह्म को मंदिर, मस्जिद, काबा, कैलाश, क्रिया-कर्म, आडंबर, योग, वैराग्य आदि में नहीं पाया जा सकता।वह हर प्राणी के भीतर उसकी सांसों की सांस में बसता है।	1
	(क) कथन सत्य और कारण उसकी सही व्याख्या करता है	
	(ख) कथनअसत्य और कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता है	
	(ग) कथन सत्य और कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता है	
	(घ) कथन और कारण दोनों असत्य	
	(पाठ आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न)	
6.	**'मोको कहाँ ढूँढ़े बंदे' पद में कवि ने ईश्वर को कहाँ ढूँढ़ने के लिए कहा है?** 1. मंदिर में 2. तीर्थों में 3.मस्जिद में 4. अपने अंदर	1
	(क) (1)और(2) **(ख)** 1और 3	
	(ग) (2)और(3) **(घ)** केवल(4)	
7.	**कबीर के अनुसार 'संत-सुजान' कौन नहीं है?** 1. गेरुए वस्त्रधारण करने वाला 2. अपने पक्ष का प्रचार करने वाला 3.जटा-जूटधारी 4. निष्पक्ष भाव से प्रभु-स्मरण करने वाला	1
	(क) (1)और (2) **(ख)** केवल (4)	
	(ग) (1),(2) और (3) **(घ)** (1)और(3)	

egyanarchive

8.	किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके किससे होती है? 1. कुल 2. वस्त्र 3.आवास 4. कर्म	1
	(क) केवल(4)	
	(ख) (1)और(2)	
	(ग) (1)और(3)	
	(घ) (1),(2)और(3)	
9.	कवि ने संसार को किसका रूप माना है? 1हाथी 2. स्वान 3.सियार 4. सिंह	
	(क)केवल(4)	
	(ख)(1)और(4)	
	(ग)(1)और(3)	
	(घ)केवल(2)	
10.	'कहै कबीर भाँन के प्रगटे उदित भया तम खीनाँ' में' भाँन' से सम्बंधित पर्यायवाची समूह है? 1शशि, निशाकर,रजनीकर 2. सुबह,दोपहरसाँझ 3.दिनकर,दिवाकर,भास्कर 4. उक्त सभी	
	(क)केवल(4)	
	(ख)(1)और(2)	
	(ग)केवल(3)	
	(घ)केवल(2)	
	(वर्णनात्मकप्रश्न)	
11.	साखी का क्या अर्थ है? कबीर के दोहे साखी क्यों कहलाते हैं?	2
	उत्तर:- ---------- ---------- ---------- ----------	

egyanarchive

12.	कबीर ने किस बात का विरोध किया है और मनुष्य को किस बात की प्रेरणा दी है?	2
	उत्तर:- ----------	
13.	ऊँचे कुल से क्या तात्पर्य है? कबीर ने किस व्यक्ति को ऊँचा नहीं माना? कोई व्यक्ति किस कारण से महान बन सकता है ?लिखिए	2
	उत्तर:- ----------	
14.	कबीर की भाषा पर प्रकाश डालिए।	2
	उत्तर:- ----------	
15.	पखापखी क्या है? इसमें डूबकर सारा संसार किसे भूल रहा है?	2
	उत्तर:- ----------	

egyanarchive

उत्तरमाला

प्रश्न	दक्षता/उद्देश्य	उत्तर	
		(काव्यांश आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न)	
1.	अर्थग्रहण	उत्तर:- (ग) केवल (1)	1
2.	अवधारणा	उत्तर:- (घ) केवल (2)	1
3.	अवबोधात्मक	उत्तर:- (क) (1)और(2)	1
4.	विषयवस्तु	उत्तर:- (ख) (3)	1
5.	तार्किकता	उत्तर:- (क) कथन सत्य और कारण उसकी सही व्याख्या करता है	1
		(पाठ आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न)	
6.	पहचान	उत्तर:- (घ)केवल(4)	1
7.	विभेदात्मता	उत्तर:- (ग) (1),(2)और(3)	1
8.	अवधारणा	उत्तर:- (क)केवल(4)	1
9.	विषयवस्तु	उत्तर:- (घ)केवल(2)	1
10.	शब्द भंडार	उत्तर:- (ग)केवल(3)	1
		(वर्णनात्मकप्रश्न)	
11.	अवधारणा	उत्तर:- (अध्यापक अपने विवेक से उत्तर जांचे)'साखी' शब्द 'साक्षी' का तद्भवरूप है, जिसका शाब्दिक अर्थ है-आँखों से देखा गवाह या गवाही।कबीर अनपढ़ थे, जिसे उन्होंने 'मसि कागद छुऔ नहिं, कलम गहि नहिं हाथ' कहकर स्वयं स्वीकार किया है।उन्होंने अपने परिवेश में जो कुछ घटित हुआ उसे स्वयं अपनी आँखों से देखा और उसे अपने ढंग से व्यक्त किया। इसे साक्षात्कार का नाम भी दिया जा सकता है। स्वयं कबीर के शब्दों में 'साखी आँखी ज्ञान की', 'कबीर के दोहे साखी इसलिए कहलाते हैं क्योंकि इनमें कबीर की कल्पना मात्र का उल्लेख नहीं है बल्कि केवल दो-दो पंक्तियों में जीवन का सार व्यंजित किया गया है। उनका साखियों में व्यंजित ज्ञान 'पोथी पंखा' नहीं है प्रत्युत' आँखों देखा' है। यह भी माना जाता है कि इनकी साखियों का सीधा संबंध गुरु के उपदेशों से है। कबीर ग्रंथावली में साखियों को अनेक उपभोगों में बांटा गया है।	2
12.	अवबोधात्मक	उत्तर:- -(अध्यापक अपने विवेक से उत्तर जांचे) कबीर ने अपनी रचना में इस बात का विरोध किया है कि ईश्वर के रूप, नाम, स्थल अनेक हैं, उनको मानने वाले भी अलग-अलग हैं। वास्तव में ईश्वर एक है उसमें कोई अंतर नहीं है। इसीलिए उन्होंने मनुष्य को यह प्रेरणा दी है कि आपस में हिंदू-मुसलमान का आपसी भेदभाव मिटाकर, ईश्वर के सच्चे रूप की भक्ति करने की प्रेरणा दी है।	2
13.	मूल्य - कर्मशीलता	उत्तर:-(अध्यापक अपने विवेक से उत्तर जांचे) ऊँचे कुल से तात्पर्य है कि आर्थिक और सामाजिक रूप से श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित परिवार वाले व्यक्ति को ऊँचे कुल का माना जाता है। कबीरजी के अनुसार ऊँचेकुल से जन्म लेने पर कोई व्यक्ति ऊँचा नहीं बन जाता है। ऊँचा और महान बनने के लिए व्यक्ति को सत्कर्मों और अपने सद्गुणों के काम करने चाहिए तथा अपने जीवन को दुर्गुणों से बचाना चाहिए।	2
14.	विषय	उत्तर:- (अध्यापक अपने विवेक से उत्तर जांचे)	2

	खोजपरकता	कबीर अशिक्षित थे- ऐसा उन्होंने स्वयं 'मसिकागदछुओनहिं' कहकर स्वीकार किया है। संभवतः इसीलिए उन्होंने किसी परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग अपनी काव्य रचना के लिए नहीं किया। उन्होंने कई भाषाओं के शब्दों को अपने काव्य में व्यवहृत किया, जिस कारण उनकी भाषा को सधुक्कड़ी अथवा खिचड़ी कहा जाता है। कबीर की भाषा के विषय में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद हैं।कबीर ने स्वयं अपनी भाषा के विषय में कहा - **बोली हमारी पूरब की, हमैं लखै नहिं कोय।** **हम को तो सोई लखे, धुर पूरब का होय॥** डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी केअनुसार, "भाषा पर कबीर का ज़बरदस्त अधिकार था।वे वाणी के डिक्टेटर थे।जिस बात को उन्होंने जिस रूपमें प्रकट करना चाहा उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा दिया।"	
15.	**विषयवस्तु**	**उत्तर:-(अध्यापक अपने विवेक से उत्तर जांचे)**पखापखी से अभिप्राय यह है कि मनुष्य के मन में छिपेतेरे-मेरे, पक्ष-विपक्ष और परस्पर लड़ाई-झगड़े हैं। मनुष्य इस पखापखी के चक्कर में पड़कर ईश्वर के नाम औरभक्तिभाव को भूल जाता है, मनुष्य को यह नहीं भूलना चाहिए कि उसकी भक्ति और सद्कर्म उस के साथ जाएँगे।	2

egyanarchive